ऐसे थे वे

महादेवी वर्मा

(यह पाठ संस्मरण के रूप में है, जिसमें सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका महादेवी वर्मा ने जवाहरलाल नेहरू से अपने प्रथम साक्षात्कार का वर्णन किया है। तब वे बालिका ही थीं। अतः उनकी बालसुलभ चेष्टाओं और नेहरू जी की चुटकियों ने इसे अत्यंत रोचक बना दिया है। नेहरू जी के प्रधानमंत्री बनने पर वे फिर उनसे मिलने जाती हैं। नेहरूजी के मुक्त और स्नेहभरे व्यवहार और आत्मीयता से वे बहुत प्रभावित होती हैं।)

इस सदी के दूसरे दशक की बात है । मैं अपनी बहन के साथ क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज के छात्रावास में आ गई थी । तत्कालीन आचार्या कुमारी तुलास्कर ही हमारी स्थानीय अभिभाविका थीं । वे स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों से जुड़ी थीं और विशेष अवसरों पर आनंद भवन भी जाती थीं ।

मैंने उनके साथ जाने का हठ किया । किंतु वे मुझे तभी साथ ले जाने के लिए तैयार हुईं, जब पिताजी की अनुमति मिल गई । मैं पहले-पहल आनंद भवन कब गई, यह तो मुझे याद नहीं है किंतु वहाँ की अनेक घटनाएँ मेरी स्मृति में अंकित हैं । उन्हीं में भाई जवाहर लाल के प्रथम दर्शन भी हैं।

एक दिन जैसे ही मैं कक्षा से बाहर आई, आचार्या जी को ताँगे में बैठने के लिए तैयार पाया तब छात्रावास जाकर पुस्तकें रखने और कपड़े बदलने का समय ही नहीं था। अत: उनके साथ आनंद भवन जाने की उत्सुकता में बस्ता लिए, स्कूल के कपड़ों में ही ताँगे में जा बैठी ।

वहाँ कई लोग थे । आचार्या जी उन बड़े आदमियों से क्या-क्या बातें करती रहीं, यह तो ज्ञान नहीं, क्योंकि उस समय मैं वार्ता से अधिक वहाँ के दृश्य की ओर आकर्षित थी ।

उस दिन लौटते समय न जाने किस हड़बड़ी में बस्ता वहीं छोड़कर बाहर आ गई । बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँचते ही पीछे से सुनाई दिया— ये किताबें तुम्हारी हैं ? मुड़कर देखते ही मैं जहाँ–की–तहाँ खड़ी रह गई। बरामदे में खड़े भाई जवाहर लाल मेरे बस्ते को झुला रहे थे ।

मँझला कद, गौर वर्ण, स्वच्छ खादी के परिधान में दुबली-पतली पर सशक्त काया, चौड़ा उज्ज्वल माथा, लंबा-सा मुख, सीधी नासिका, हँसी से भरे ओंठों में चमकती दंत-पंक्ति । काली पुतलियों से युक्त आँखें न बड़ी थीं न छोटीं, किंतु उनकी दृष्टि में एक विशेषता थी । सामने खड़े व्यक्ति को ऐसा लगता था मानो वे आँखें उसके पार कुछ देख रही हों ।

बस्ते का स्वामित्व मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया और उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया । उन्होंने सावधानी से बस्ता मुझे थमाते हुए भृकुटियों पर बल देकर कहा, ''क्या बात है ! किताबें फेंकती घूमती हो । पढ़ती क्या खाक होंगी ?''

भाई जवाहर लाल जी के मुख से 'क्या बात है' मैंने अनेक बार अनेक अवसरों पर सुना है और हर बार उस वाक्य पर हँसी ही आई है । मोटर-दुर्घटना में मेरे पैर की हड्डी टूट जाने पर भी उन्होंने कहा, ''क्या बात है ! तुमने अपना पैर ही तुड़वा लिया ।'' मेरे कई महीनों तक अस्त-व्यस्त रहने पर भी टिप्पणी थी- 'क्या बात है, तुम अकसर बीमार हो जाती हो ।' पर पहली भेंट के दिन उनकी डाँट में, बड़े की छोटे के प्रति जो आत्मीयता थी, उसने मुझे रुला दिया । सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों में जितना कम ज्ञान होता है, उतनी ही भावुकता अधिक होती है । किसी छोटी लड़की को रुला दिया है, यह विचार ही उनके पश्चात्ताप के लिए पर्याप्त था । अत: मेरे कंधे थपथपाते हुए और किताबें सावधानी से रखने का उपदेश देते हुए, वे मुझे ताँगे तक पहुँचाने आए ।

मैंने उन्हें अनेक बार देखा–मालाओं से लदे-लदे भाषण देते, जेल जाते, घर में बड़ी मधुर आत्मीयता से कमला भाभी से बातें करते, छोटी-सी इंदिरा जी पर स्नेहिल हाथ फेरते, संपूर्ण आत्म-समर्पण के साथ बापू के चरणों में बैठते । स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिक और सेनापति के रूप में भी उनका संपर्क सुलभ रहा और प्रयाग महिला विद्यापीठ के प्रथम कुलपति के रूप में भी । किसी भी स्थिति में उनके मानवीय रूप में कोई अंतर नहीं मिला ।

अत्यधिक शासकीय व्यस्तता में भी उनका स्नेह भरा मानवीय रूप अक्षुण्ण ही रहा । उनके प्रधानमंत्री होने के उपरांत मुझे एक विशेष काम के लिए दिल्ली जाना पड़ा । मैंने सोचा की जवाहर भाई से भी मिल लूँ ।

प्रधानमंत्री से मिलने का समय निश्चित करने का अवकाश नहीं था, अत: ऐसे ही प्रभात बेला में उनके विशाल भवन पर उपस्थित हुई । उनके निजी सचिव ने कहा, ''समय पूर्व-निश्चित किए बिना भेंट होना संभव नहीं । यहाँ तो लोग दस-दस दिन प्रतीक्षा में पड़े रहते हैं ।'' सुनते ही मेरा मन विद्रोह कर उठा । मैंने कहा, ''वह प्रधानमंत्री की व्यस्तता का प्रमाण हो सकता है, परंतु जो दस-दस दिन पड़े रहते हैं, उनके निठल्लेपन का तो निश्चित प्रमाण है ही । आप जाकर उन्हें सूचना देने का कष्ट करें कि प्रयाग से महादेवी आई हैं और उन्हें आज ही जाना है । वह उनसे मिलने की प्रतीक्षा में जीवन के दस दिन खोने की स्थिति में नहीं हैं ।''

मेरा संदेश किस रूप में पहुँचा, यह पता नहीं । किंतु शीघ्र ही भाई जवाहर लाल तेजी के साथ ज़ीने से उतरते दिखाई दिए और मेरा हाथ पकड़कर एक प्रकार से खींचते हुए ऊपर की मंजिल में ले आए ।''यहाँ बैठो, तुम्हारे लिए कॉफी आती है । इलाहाबाद के हाल-चाल बताओ ।'' वे इस प्रकार बात कहते गए कि मुझे न रुठने की याद रही, न शिकायत करने की ।

कार्यव्यस्त रहने पर भी दूसरों के विश्वास और सुविधा की चिंता करना वे शायद ही भूलते थे । मेरी स्मृति में एक और घटना प्रत्यक्ष हो जाती है । एक बार जब दद्दा मैथिलीशरण और मैं उनसे मिलने गए तब उन्होंने सहज आत्मीयता से मुझे रात में अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण दे डाला । दद्दा विनोदी भाव से बोल उठे, ''अवश्य पंडित जी, महादेवी की इस बार शुद्धि कर डालिए । हम तो किसी प्रकार बच ही गए हैं, यह न बच पाए ।''

तब उन्हें स्मरण आया कि मैं तो दद्दा के समान शाकाहारी हूँ । उन्होंने पूछा, ''क्या तुम अब तक घास-पात ही खाती हो ?''प्रश्न के उत्तर में दद्दा ने सविनोद कहा, ''आप सबने हमारे लिए और छोड़ा भी क्या है ।'' इस विनोद के बीच भी वे इंदिराजी को बुलाकर अलग से शुद्ध शाकाहारी भोजन बनवाने की व्यवस्था करने का निर्देश देना नहीं भूले ।

रात में देखा, काँटे-छुरी तथा मांस के अनेक खाद्य-पदार्थों से सजी लंबी मेज के एक ओर मेरे लिए कढ़ी, चावल, शाक, दही आदि के कटोरे-कटोरियों से भरी चमचमाती थाली रखी हुई है । उन्होंने जिस प्रकार मेरी इच्छा का ध्यान रखा था, उसी प्रकार वे मेज के शिष्टाचार की ओर भी सतर्क थे । उन्होंने हँसते हुए मेरी थाली अपने पास रखवाई और उत्यंत आत्मीयता से मुझसे कहा, ''जो तुम नहीं खाती हो, उसे दूसरे को खाते देख नाक-भौं मत चढ़ाना, अच्छा !''

आम काटने की कला में उन्हें विशेष प्रवीणता प्राप्त थी, जिसका प्रदर्शन कर वे अपने अतिथियों को विस्मित कर देते थे । चाकू से कलमी आम को एक ओर से चीरकर बड़ी सफाई से उसकी गुठली बाहर निकाल देते थे, और आम साबुत-सा ही दिखाई देता था ।

व्यक्तिगत संबंधों की स्वीकृति और निर्वाह में उनके साथ तुलना में ठहरने वाले व्यक्ति बहुत ही कम हैं ।

शब्द-अर्थ

दशक - दश वर्ष की अवधि
तत्कालीन - उस समय का
अभिभाविका - संरक्षिका (माता-पिता के स्थान पर)
वार्ता - बातचीत
काया- शरीर
नासिका - नाक
आत्मीयता - अपनापन
कुलपति - विश्व विद्यालय के आचार्य
अक्षुण्ण- ज्यों–का–त्यों और पूरा, अखंडित
विनोद - प्रसन्नता, परिहास

स्वीकृति- स्वीकार कर लेना, मंजूरी
प्रवीणता- दक्षता, कुशलता

दूसरा दशक- १९२० से १९२९ का समय
आचार्या - मुख्य अध्यापिका
उत्सुकता - उत्सुक होने का भाव
मँझला - बीच का, न बड़ा, न छोटा
परिधान- पोशाक
स्वामित्व - प्रभुत्व, अधिकार जताना
स्नेहिल - स्नेह- युक्त
प्रशासकीय - प्रशासन सम्बन्धी
प्रत्यक्ष हो जाना - सामने आ जाना
विनोदी - परिहास करने वाला,
जो लोगों को हँसानेवाली बातें कहता हो,
निर्वाह- बनाए रखना (संबंधों का निर्वाह)
नाक भौं चढ़ाना- अप्रसन्नता प्रकट करना

अभ्यास

बोध और विचार :

मौखिक :

१. इस पाठ की लेखिका किस समय और किसके बारे में बात कर रही हैं ?
२. पहली बार लेखिका की भेंट जवाहरलाल जी से कहाँ हुई ?
३. नेहरूजी के प्रधानमंत्री बनने के बाद लेखिका उनसे कहाँ मिलने गईं ?
४. खाने की मेज पर महादेवी वर्मा के लिए अलग भोजन क्यों परोसा गया ?
५. दद्दा शब्द का प्रयोग लेखिका ने किसके लिए किया है ?

लिखित :

१. नेहरू जी देखने में कैसे लगते थे ? अपने पठित पाठ के आधार पर लिखो ।

२. महादेवी के जवाहरलाल नेहरू संबंधी विचारों को अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा-बोध :

१. 'अ' उपसर्ग लगाकर विपरीत शब्द बनाओ :

परिचित, निश्चित, सावधानी, स्वस्थ, सहिष्णु, सहमत, शिष्ट, संभव

२. नीचे के कोष्ठक से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरो :

(महाविद्यालय, मांसाहारी, निरक्षर, ईर्ष्यालु, शासकीय, भूतपूर्व, शाकाहारी, अस्वस्थ, परिचित)

(क) जो मांस नहीं खाता हो, उसे..... कहते हैं ।

(ख) जो स्वस्थ न हो, उसे ..... कहते हैं ।

(ग) जो शासन के संबंध में हो, उसे..... कहते हैं ।

(घ) जो जाना- पहचाना हो, उसे..... कहते हैं ।

(ङ) जो पढ़ा लिखा न हो, उसे..... कहते हैं ।

(च) जो पहले हो चुका हो, उसे..... कहते हैं ।

(छ) जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो, उसे..... कहते हैं ।

(ज) जो मांस खाता हो, उसे..... कहते हैं ।

(झ) जहाँ विद्यालय की पढ़ाई के बाद पढ़ते हैं, उसे..... कहते हैं ।

३. नीचे लिखे शब्दों के स्त्री लिंग रूप लिखो :

अभिभावक

पुरुष

लेखक

प्रशासक

पंडित

छात्र

आचार्य

४. नीचे दिए गए शब्दों के अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग करके शब्दों को फिर से लिखो :

लंबा.....	उपरांत.....	पंडित.....
कंधा.....	मंत्री.....	संपर्क.....
संबंध.....	किंतु.....	आनंद.....
संदेश.....	खंडित.....	घंटा.....

याद रखिए :

(क) क, ख, ग, घ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ङ् होता है ।

(ख) च, छ, ज, झ से पूर्व आने वाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ञ् होता है ।

(ग) ट, ठ, ड, ढ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) ण् होता है ।

(घ) त, थ, द, ध से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) न् होता है ।

(ङ) प, फ, ब, भ से पूर्व आनेवाले वर्ण पर अनुस्वार (ं) म् होता है ।

५. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उच्च स्वर में इन शब्दों को पढ़ो :

सैनिक, स्वतंत्रता, संग्राम, अंकित, आत्मीयता, अभिभाविका, स्थानीय, तत्कालीन, छात्रावास, पर्याप्त, संपर्क ।

अनुभव विस्तार :

१. इस लेख में 'दद्दा' जिन मैथिली शरण के लिए कहा गया है, वे थे सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त । इन्हें श्रद्धा से 'दद्दा' बुलाया जाता था ।

२. महादेवी वर्मा आधुनिक युग के प्रमुख कवियों में से एक हैं । इनकी श्रेष्ठ काव्य कृति 'नीरजा', 'यामा' आदि हैं । इनके संस्मरण हृदयस्पर्शी हैं । कुछ अन्य संस्मरण भी पढ़ो ।

३. महादेवी की काव्य-पंक्तियाँ पढ़ो और याद रखो ।